PEER SAKHI SULTAN JI SADHANA

पीर सखी सुलतान जी साधना (लालां वाले पीर)

Vikrantnath

WWW.AAYIPANTHI.COM ज्येष्ठ और आषाढ के महीने में पीर सखी सुलतान जी की साधना की जाती है ! इन्हें लालां वाला पीर भी कहा जाता है ! एक मान्यता के अनुसार यदि किसी के घर में केवल लड़कियां ही पैदा होती हो तो इनकी कृपा से उन्हें पुत्र की प्राप्ति हो जाती है ! इनके दरबार में भूत प्रेत आदि ओपरी बाधाओं का भी इलाज किया जाता है ! माना जाता है कि सखी सुलतान जी के दरबार के पहरेदार भैरों यति हैं !

यह भगवान् शिव के अवतार भैरव नहीं हैं बल्कि सुलेमान पैगम्बर के पुत्र भैरों यति हैं अधिकतर लोग दोनों भैरव को एक ही समझ लेते हैं ! सखी सुलतान जी का प्रसिद्द स्थान हिमाचल में निगाहा नामक स्थान पर है इसलिए लोग इन्हें पीर निगाहे वाला भी कहते हैं ! यह जो साधना मैं आपको बता रहा हूँ यह कई बार आजमाई हुई है ! यह साधना मुझे अर्जुन सिंह जी से प्राप्त हुई थी ! अर्जुन सिंह जी पंजाब के फतेहगढ़ जिले के संघोल नामक गाँव के रहने वाले थे , यह गाँव लुधियाना चंडीगढ़ रोड पर बसा हुआ है, इसे उच्चा पिंड भी कहते हैं क्योंकि यह बहुत उंचाई पर हैं ! इस गाँव में बौद्ध काल के 11 मंदिर दफन हो गये थे बाद में भारतीय पुरातत्व विभाग ने इन्हें खोज निकाला और हड़प्पा काल की बहुत सी मूर्तिया और आभूषण भी मिले ! केवल दो ही मंदिर सरकार खोज पाई बाकी मंदिर जिस स्थान पर दबे हैं वहा पर अब लोगो के घर बसे हैं !

वह लोग पुरातत्व विभाग से कई बार मुकद्दमा जीत चुके है क्यूंकि उनके पास रजिस्ट्री है और पुरातत्व विभाग उनसे जबरदस्ती वो जगह खाली नहीं करवा सकता ! मेरे ताऊ जी पुरातत्व विभाग में कार्यरत थे संयोग से उनकी बदली उच्चा पिंड संघोल में हो गयी जब यह बात मेरे गुरु जी को पता चली तो उन्होंने मुझसे कहा कि जाओ संघोल घूम आओ और इस पर मैंने गुरूजी से पूछा ऐसा क्या है संघोल में? तो गुरु जी ने कहा संघोल में दूर दूर से बौद्ध आते हैं और अपनी साधना कर वापिस चले जाते हैं हिमाचल और तिब्बत के लामा भी इस स्थान पर साधना करने आते हैं पर वह अपनी साधना के विषय में किसी को कुछ नहीं बताते जाओ ऐसे लामाओं के दर्शन करो, वह तुम्हे उन्ही बौद्ध स्तूपों के आसपास मिल जायेंगे और गुरु गोरखनाथ जी की कृपा से तुम उन्हें पहचान भी लोगे !

मैंने कहा ठीक है गुरूजी और मैंने अपने ताऊ जी से बात की और चल पड़ा इसके अलावा गुरूजी ने मुझे अर्जुन सिंह जी का पता भी दिया और कहा सबसे पहले जाकर अर्जुन सिंह जी से ही मिलना ! मैंने गुरु जी से कहा कि अर्जुन सिंह कौन है? तो उन्होंने कहा कि है एक रब्ब का बन्दा और जब मैं संघोल पहुंचा तो पहले दिन तो ताऊ जी के साथ पूरा संघोल घूमा और दुसरे दिन अर्जुन सिंह जी के पास पहुँच गया ! अर्जुन सिंह जी ने मुझे देखते ही पहचान लिया मैं हैरान था ! वहां के लोगो में एक बात प्रसिद्द थी कि लालां वाले पीर अर्जुन सिंह के कान में आवाज देते हैं इसलिए उन्हें बैठे बैठे सब कुछ पता चल जाता है ! उनके साथ जब बातचीत चली तो मैंने उनसे पुछा कि आप मेरे गुरूजी को कैसे जानते हैं, तो उन्होंने कहा जब मैं तुम्हारी उम्र का था तो हमारे इलाके में एक जट्ट सिक्ख तांत्रिक बहुत प्रसिद्द था उनके समान पूरे इलाके में दूसरा कोई नही था ! उस तांत्रिक पर इस्लाम का इतना प्रभाव हुआ कि वह मुस्लमान बन गया ! मैं उन्हें अपना गुरु मानकर उनसे ज्ञान लेने गया पर उन्होंने मना कर दिया और कहा एक शर्त पर अपना शिष्य बनाऊंगा पहले मेरी सेवा कर मेरे खेतो में हल चला और यदि मुझे तुमने अपनी सेवा से प्रसन्न कर दिया तो सारा ज्ञान दे दूंगा मैं लगभग 9 साल तक उनके खेतो में काम करता रहा और एक दिन उनके मन में दया आ गयी और उन्होंने मुझे बुला कर कहा कि मेरा काल आ चुका है मेरा जीवन कुछ ही दिन शेष बचा है ! मैं तुझे ऐसा अनमोल ज्ञान दूंगा जो शायद ही दुसरे किसी के पास हो और ऐसा कह कर उन्होंने सारी विद्या मुझे सिखा दी !

कुछ दिन बाद उन्होंने अपनी देह त्याग दी और उन्हें कब्र में सुला दिया गया ! उनकी अंतिम क्रिया के बाद मैं घर वापिस आ गया और उनकी बताई साधना शुरू कर दी ! उन्होंने कहा था लालां वाले पीर की सेवा करते रहना जो मांगोगे वो मिल जाएगा और हुआ भी कुछ ऐसा ही एक गरीब घर में पैदा हुए अर्जुन सिंह प्रसिद्द तांत्रिक बन गये और उन्हें धन की कोई कमी न रही पर लालां वाले पीर का कभी प्रत्यक्ष दर्शन न हुआ केवल कान में आवाज आती रही ! वह जगह जगह सिद्ध तांत्रिक और संतो को ढूंढने लगे जो उन्हें लालां वाले पीर का प्रत्यक्षीकरण करवा दे पर ऐसा कोई न मिला ! राजस्थान से आये हुए एक व्यक्ति ने उन्हें सिद्ध रक्खा राम जी के विषय में बताया तो उनके मन में सिद्ध रक्खा राम जी के दर्शनों की इच्छा हुई और वह निकल पड़े राजस्थान के बीकानेर की तरफ जहाँ सिद्ध रक्खा राम जी ने अपना धूना जमा रखा था पर उस व्यक्ति ने यह भी बताया था कि सिद्ध रक्खा राम जी अधिक किसी से मिलते नहीं और यदि गुस्सा आ जाए तो किसी पर भी डंडा घुमा देते हैं ! उजाड़ स्थान में रहते हैं और पास आने वाले को ईंट पत्थर खाने पड़ते है और उनके पास जाने वालो को ज्यादातर गालियों का ही प्रसाद मिलता है !

इतना सब जानते हुए भी मन दृढ कर अर्जुन सिंह जी उनसे मिलने जा पहुंचे और उन्हें प्रणाम किया तो उन्होंने एक ईंट उठाकर दे मारी ! अर्जुन सिंह उठकर भागते वक्त वही ईंट उठा पंजाब ले आये जो सिद्ध रक्खा राम जी ने उन्हें मारी थी और उस ईंट को अपने पूजा स्थल में स्थापित कर दिया ! दुसरे दिन उन्हें लालां वाले पीर स्वप्न में नजर आने लगे और थोड़े दिनों बाद उनका प्रत्यक्षीकरण हो गया उन्होंने मुझसे कहा कि धन्य हो तुम क्योंकि तुम्हारे गुरु सिद्ध रक्खा राम जी हैं यह तुम्हारे पूर्व जन्म के शुभ कर्मो का फल है !

मैंने जब उनसे पुछा कि आप गुरु जी से दोबारा मिले तो उन्होंने कहा हाँ बहुत बार मिला और बहुत कुछ सीखा ! उन्होंने कहा कि वह नारियल के फल के समान है जो ऊपर से सख्त होता हुआ भी अन्दर से नर्म होता है, ऐसे सिद्ध योगी को मेरा शत शत प्रणाम है !

|| मंत्र ||

बिस्मिल्लाहरहमानअरहीम
काला भैरो कबरीयाँ जटा
हत्थ कड़की मोड़े मढ़ा
यहाँ भेजूं भैरों यती
वही हाज़िर खड़ा
कक्की घोड़ी सब्ज लगाम
उत्ते चढ़ सखी सुलतान
सखी सुलतान की दुहाई
चले मन्त्र फुरे वाचा
देखां बाबा लक्ख दाता पीर
तेरे ईलम का तमाशा
मेरे गुरु का शब्द सांचा !

|| विधि ||

इस मंत्र को 41 दिन 5 माला जप करे ! जप के दौरान ब्रह्मचारी रहे , भूमि-शयन करे ! हर रोज 5 तेल के दीपक जलाएं और पांच रोटियों का चूरमा बनाकर बच्चो में बांटे ! जप गुरुवार से शुरू करे और हर गुरुवार को पीले चावल बनाकर किसी पीर की मजार पर पीर सखी सुलतान के नाम से चढ़ाये ! हर रोज थोड़े से कच्चे आटे में थोडा सा गुड और सरसों का तेल मिलाकर अच्छे से घोल ले , जप पूरा होने पर यह किसी कुत्ते को खिला दे ! जिस दिन जप पूरा हो उस दिन 21 किलो का रोट बनाकर उसका भोग लगायें ! मंत्र सिद्ध हो जायेगा और आपके कानो में आवाज़ पड़ने लगेगी !

|| प्रयोग विधि ||

इस मंत्र को सिद्ध करने के बाद यदि किसी विशेष कार्य को करवाना हो तो गुरुवार के दिन पांच चिराग लगाये और इस मंत्र का जप शुरू कर दे ! आपके कानो में आवाज़ पड़ने लगेगी ! उस समय पीर से जो भी प्रार्थना की जाएगी , पीर उसका उत्तर देंगे और उस समय पीर से कहे कि अमुक कार्य सिद्ध होने पर मैं 21 किलो का रोट लगाऊंगा ! कार्य पूरा होने पर ऐसा करे !

नोट – यह जो रोट लगाया जाता है उसका अधिकार सिर्फ एक ही जाति के पास है , उस जाति को भराई कहते है ! यदि रोट लगवाना हो तो इस जाति से लगवाएं क्योंकि इस जाति के अलावा यदि कोई और रोट लगता है तो पीर स्वीकार नहीं करते ! यह जाति एक मुस्लिम जाति है

PEER MUHMMAD SADHANA

पीर पैगम्बर साधना

मुस्लिम साधनाओ में एक से बढ़कर एक साधना है ! मुस्लिम तंत्र को बहुत प्रबल माना जाता है क्योंकि पूरी कुरान अपने आप में शाबर मन्त्र है जिसमे पैगम्बर मुहम्मद और अल्लाह का वास्ता दिया गया है मतलब दुहाई दी गई है ! कुरान पाक के इलावा भी मुस्लिम संतो ने बहुत से शाबर मंत्रो की रचना की है ! पैगम्बर मुहम्मद को इस्लाम धर्म के संस्थापक माना जाता है,कहा जाता है अल्लाह ने 700 साल में बिस्मिल्लाह का निर्माण किया इसलिए बिस्मिल्लाह बोलने से मुह पवित्र हो जाता है और खुदा का नूर 30000 साल में एक बार उनसे जुदा होता है और कादरी खानदान में मान्यता है कि खुदा ने अपना नूर अपने से अलग करके ही पैगम्बर मुहम्मद का निर्माण किया है !

पंजाब के सुफी संतो का कहना है कि " रसूल खुदा दे आप ने रब्ब बाकी दुनिया ठगा दी ठग " मतलब सारी दुनिया अल्लाह के नाम पर ठग रही है केवल पैगम्बर मुहम्मद ही खुदा का रूप है,कहा जाता है जब इस्लाम का प्रचार हुआ तो अरब के मुसलमानों ने जबरदस्ती वहां के हिन्दुओ को मुस्लमान बनाया और प्राचीन मंदीर तोड़ दिए ! वहां के हिन्दुओ ने देवी मन्नत की मूर्ती सोमनाथ पंहुचा दी और उस मूर्ती का पीछा करते करते मुस्लिम भारत गए और सोमनाथ मंदीर को तोड़ दिया पर मन्नत देवी की साधनाए आज भी की जाती है यदि गुरु इच्छा हुई तो एक दिन आप सबके सामने मन्नत देवी की साधना भी जरूर रखूँगा ! पंजाब के मशहूर कवि वारिश शाह ने अपनी किताब हीर में लिखा है

अव्वल हमल खुदा दा विरध कीजे,

इश्क कित्ता सो जग दा मूल मियां,

पहला आप ही रब्ब ने इश्क किता,

ते महबूब ने नवी रसूल मियां !

उनका मानना था कि पैगम्बर मुहम्मद अल्लाह के महबूब है ! जिस प्रकार हिन्दू धर्म में देव पंचायत होती है ठीक उसी प्रकार इस्लाम में भी पंचायत होती है इसे " पंज तन पाक " कहा जाता है!इस पंचायत में पैगम्बर मुहम्मद,शाह हजरत अली,बीबी फातिमा,हसन और हुसैन आते है ! पैगम्बर मुहम्मद के बारे में लिखना मेरी भूल है क्योंकि जो " महबूब ऐ खुदा " हों उनका वर्णन कौन कर सकता है?उनके एक इशारे से चाँद के दो टुकड़े हो जाते है तो मुझ जैसे पापी से उनकी महिमा का गुणगान कैसे हो सकता है ? बस इतना ही कहूँगा कि यदि पैगम्बर मुहम्मद कि कृपा मिल गयी तो जिन्न जिन्नात,पीर पैगम्बर औलिये और परियाँ सबकी कृपा की वर्षा आप पर होगी !

एक मान्यता के अनुसार यदि पांच चिराग जला दिए जाये और " पंज तन पाक " कि दुहाई देकर किसी भी पीर को कार्य करने के लिए प्रार्थना कि जाये तो वे उसी समय आपकी मदद करते है ! यह साधना मुझे मेरे गुरुदेव सिद्ध रक्खा रामजी से प्राप्त हुई और इस साधना के सम्पूर्ण होते होते आपको पैगम्बर मुहम्मद के दर्शन भी हो जायेगे!

|| मन्त्र ||

पाक मुहम्मद अल्लाह हु

तू ही तू तू ही तू

तुम हो मालिक कुल जहान

मुश्किल मेरी कर आसान

अल्लाह कहो अल्लाह ही अल्लाह

बिस्मिल्लाह बिस्मिल्लाह बिस्मिल्लाह !

|| विधि ||

इस साधना को किसी भी शुक्रवार से शुरू करे और पांच तेल के दीपक जलाये ! एक बार बिस्मिल्लाह कहे और फिर इस मन्त्र की केवल ५ माला जपे ! शुक्रवार को पांच फकीरों को भोजन खिलाये!यह साधना आपको ४१ दिन करनी है ! अंतिम दिन पीले चावल बांटे!

इस साधना से आपका कल्याण हो ! इसी कामना के साथ.....